डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय-संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र

Date Page 11/7/20

किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग (पद्यांश व्याख्या)

स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्
हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः।
सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिम्
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः ॥5॥

अन्वयः- यः अधिपं साधु न शास्ति सः किं सखा। यः हितात् न संशृणुते स किम्प्रभुः। नृपेषु अमात्येषु च अनुकूलेषु (सत्सु) सर्वसम्पदः सदा रतिं कुर्वते।

भाषार्थः- (यः अधिपं साधु न शास्ति) जो स्वामी को उचित हितकारी उपदेश नहीं देता, (सः किंसखा) वह निकृष्ट मित्र होता है। (यः हितात् न संशृणुते) जो स्वामी हित चाहने वाले मित्र की बात को ध्यान से नहीं सुनता, (स किम्प्रभुः) वह निकृष्ट स्वामी होता है। (नृपेषु अमात्येषु च अनुकूलेषु) क्योंकि राजाओं और मन्त्रियों के अनुकूल रहने पर ~~सभी सम्पत्तियाँ~~ (सर्व सम्पदः) सभी सम्पत्तियाँ (सदा रतिं कुर्वते) सदैव अनुराग करती हैं। अर्थात् सदैव अक्षुण्ण बनी रहती हैं।

भावार्थ- इसमें योग्य मंत्री तथा राजा के स्वभाव का निर्देश करके मंत्रियों और राजाओं के

Scanned with CamScanner

पारस्परिक सामञ्जस्य को राज्य की सतत समृद्धि का कारण बताया गया है।

पदव्याख्या :- किंसखा = कुत्सितः सखा किंसखा (कर्मधारय)। अधिपम् = अधिपाति इति अधिपः, तम्। अधि + पा + क प्रत्यय कर्तरि। हितात् = धा + क्त, भावे हितम्। हितमस्ति अस्येति हितः, तस्मात् (हित + अच् प्रत्यय) 'आख्यातोपयोगे' सूत्र से नियम पूर्वक सुनने के अर्थ में पञ्चमी विभक्ति हुई। संशृणुते = सम् + श्रु + लट् लकार, अकर्मक और समूर्वक होने से आत्मनेपद। किम्प्रभुः = कुत्सितः प्रभुः, कुत्सित स्वामी (कर्मधारय) अनुकूलेषु = कूलम् अनुगताः अनुकूलाः, तेषु। अनुकूल होने पर (नृपेषु अमात्येषु का विशेषण) (प्रादि तत्पुरुष)। रतिं कुर्वते = अनुराग करती है। रतिम् = रम् + क्तिन् प्रत्यय, द्वितीयाएकवचन कुर्वते = कृ + लट् लकार (सर्वसम्पदः की क्रिया)। नृपेषु अमात्येषु च = राजाओं और मंत्रियों के (अनुकूल होने पर), 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र से सप्तमी। ~~अमात्य~~ अमात्य = अमा + त्य 'अमेहक्त्वतसित्रेभ्य एव' वार्तिक के अनुसार। इहत्य, तत्रत्य, तत्रत्य की तरह। सर्वसम्पदः = सभी सम्पत्तियाँ। सर्वाः सम्पदः (कर्मधारय)। सम्पदः = सम् + पद् + क्विप्

टिप्पणी :-

इसमें अर्थान्तरन्यास अलंकार है। 'उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात् सामान्यविशेषयोः'। इति।

Scanned with CamScanner